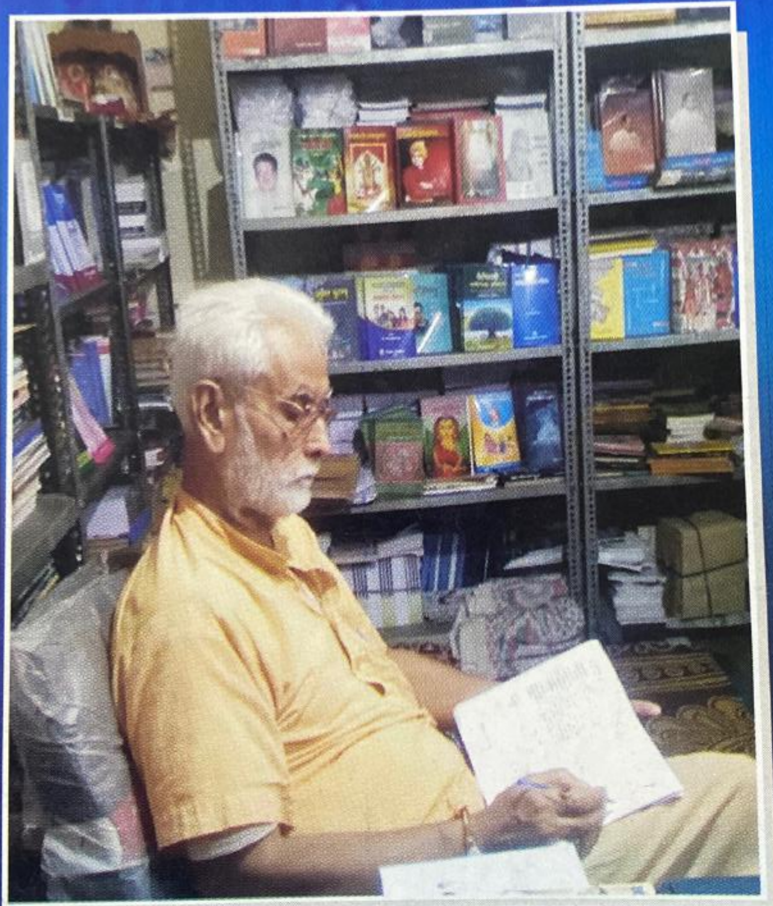
हमर अभाग : हुनक नहि दोष





शरदिन्दु चौधरी

हमर अभाग : हुनक नहि दोष

संस्मरणात्मक निबंध

(बात-बातपर बात-III)

शरदिन्दु चौधरी

शेखर प्रकाशन

पटना-24

प्रकाशक : शेखर प्रकाशन
2A/39, इन्द्रपुरी
पटना–800024
मो.–09334102305

प्रथम संस्करण : अगस्त, 2021

शब्द संयोजन/ आवरण : अजय कुमार (टुटु)

मूल्य : 50/– टाका

मुद्रक : जयमाता दी ऑफसेट
मछुआटोली, पटना

Hamar Abhaag : Hunak Nahi Dosh

by

Shardindu Chaudhary



समर्पण

3 नवम्बर, 2020 हमरा जीवनक अति महत्वपूर्ण दिन छल। 3 नवम्बर, 1920 केँ हमर पूज्य पिता पं0 सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जन्म भेल छलनि आ ई हुनक 'जन्म शताब्दी वर्ष' छनि। हम आ हमर सम्पूर्ण परिवार हुनका स्मरण करैत नमन करैत हुनकहि कृति 'हस्ताक्षर'केँ ओहि दिन लोकार्पित कयने रही।

ई पोथी 'हस्ताक्षर' कोरोना कालमे प्रकाशित भेल छल से एकटा विशेष उद्देश्ये। हुनक सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय, कष्टपूर्ण ओ अभावग्रस्तक रूपमे बितलनि मुदा ने हुनका कलम रुकलनि आ ने लेखकवर्गक निर्माण रुकलनि। प्रायः तेँ आदरणीय गोविन्द झा जी हुनक कालकेँ मैथिलीक **'स्वर्णकाल'** मानलनि अछि।

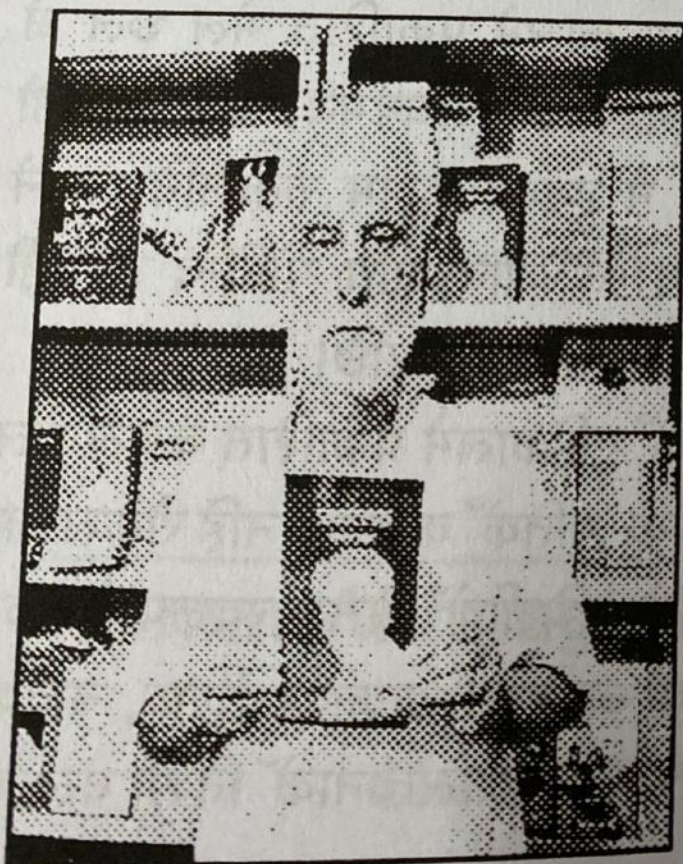
यैह दर्शयबाले 'हस्ताक्षर'केँ एहिकालमे प्रकाशित कयल गेल जाहिसँ ई बूझल जा सकय जे संघर्षक गतिकेँ कथमपि नहि रोकल जा सकैछ। मैथिलीक एहन 'हस्ताक्षर' जे मैथिलीकेँ मानक स्वरूप देलक, ठमकल मैथिलीकेँ एकटा पैघ धरती आ वृहत आकाश देलक, नाटक विधाकेँ एकटा नव मोड़ देलक, उपन्यास–आलोचनाकेँ दिशा देलक;

सम्पादकीय क्षमताक उत्कृष्टता प्रदर्शित कयलक, युवातूरकेँ स्वर देलक, आइ मैथिल समाज एहन आलोककेँ बिसरा देलक अछि।

'शेखर प्रकाशन' हुनक संघर्षक मसालकेँ आइयो प्रज्ज्वलित कयने अछि आ आगुओ हुनक ई ध्वज हुनक पौत्र चि0 'राजाशेखर' फहरबैत रहथिन से पूर्ण विश्वास अछि।

आदरणीय पं0 सुधांशु 'शेखर' चौधरी हमर पिता छलाह आ हुनक आशीर्वाद हमरा सभकेँ प्राप्त अछि। हुनक जन्मशताब्दीक अवसर पर हुनक आप्त मित्र परम आदरणीय पं0 चन्द्रनाथ मिश्र जीकेँ सेहो स्मरण करैत छियनि जे हुनक 'हस्ताक्षर' कालमे हुनक संग रहथिन।

30, अगस्त, 2021 धरि कोनो संस्था हुनका शताब्दी वर्षमे स्मरण नहि कयलकनि। यैह आजुक समाजक सोच ओ मैथिली सेवकक प्रति निष्ठा। मुदा एहि अवसर पर हम अपन ई पोथी **'हमर अभाग : हुनक नहि दोष'** हुनके समर्पित करैत छियनि एवं अपन 'सिरमौर पिता, महान व्यक्तित्वकेँ श्रद्धापूर्वक शत–शत नमन करैत छियनि।



शरदिन्दु चौधरी
31/08/2021

विषय–सूची

भूमिका

श्यामपक्ष ओ हमर लेखन

हम जे लिखैत छी से प्राय: क्यो नहि लिखैत छथि। हँ, कहियो काल भाइ लक्ष्मण झा 'सागर'क किछु–किछु एही तरहक आलेख पढ़बाक सौभाग्य भेटैत अछि। असलमे एहन वस्तु लिखबा लेल साहस चाही, अपन नोकसान उठयबाक सोचकेँ बरमहल ध्यानमे राखि कऽ करबाक चाही। श्वेत पक्ष आ श्यामपक्ष व्यक्तित्वक दू आयाम होइत अछि आ एहि दुनू पक्षपर विचार करैत निर्णयपर अयबाक चाही तखने मूल्यांकनक आधार तैयार होइत अछि आ वास्तविक रूपें मानल जाय तँ एकरे सम्यक लेखन मानल जयबाक चाही।

आइ विद्यापति किएक जीवित छथि, यात्री किएक बेर–बेर स्मरण होइत रहैत छथि। समालोचनाक बात होइते आचार्य रमानाथ झा किएक सोझांमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि, यथार्थ लेखन लेल राजकमल चौधरी किएक बेसी पढ़ल जाइत छथि। उत्कृष्ट सम्पादन ओ सुन्दर रचनाक प्रस्तुति लेल आदरणीय ललितेश मिश्रजी 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिकक किएक चर्च करैत छथि, दैनिक पत्र ओ पत्र–पत्रिकाक अभाव किएक अखरैत अछि – एहि सभ बिन्दुपर सोचल जयबाक चाही। मुदा जे समाज मात्र श्वेत पक्षपर जीवित रहि जाइत अछि से मात्र आपसमे कटाउझ करैत रहि जाइत अछि आ समग्र विकासक बात ओकर दिमागमे प्रवेशो नहि कऽ पबैत छैक। मात्र ओ सत्यम् शिवम् सुन्दरम्‌क बात टा करैत अछि अपन जीवनमे एहि भावनाक अवधरणाकेँ अपन जीवन–क्रियामे सम्मिलित नहि करैत छथि।

कहैत छथि परमआदरणीय पंडित गोविन्द झाजी—'जे व्यक्ति नीक मनुष्य नहि होइत अछि ओ नीक लेखन नहि कऽ सकैत अछि आ जँ ओ शब्द विन्यासस़ँ कोनो नीक रचना कइयो लेत तँ ओकर असरि समाजपर नहि पड़ैत छैक।' कहैत छलाह पूज्य पिता सुधांशु 'शेखर' चौधरी—जे व्यक्ति अपन व्यक्तित्व, परिवार आ समाजकेँ ध्यानमे राखि साधनापूर्वक काज नहि कऽ सकैछ ओ की युग निर्माता भऽ सकैछ?' कहलनि एकबेर आदरणीय डा. गणपति मिश्र—'हौ, जे व्यक्ति रोगीक नाड़ी देखि रोगक कारण नहि बूझि सकतै ओ की मानवक सेवा कऽ सकतै?' कहलनि आदरणीय रामदेव झाजी—'जे अपन गुरुक सेवा आ मातृभाषाक रक्षा नहि कऽ सकैछ ओ कहियो विद्वान नहि भऽ सकैछ!' बरमहल कहैत रहैत छथि—डा. बासुकी नाथ झा जी—पहिने Talent क सम्मान कयल जाइत छल। ओकर बाद Tact आ Talent क जमाना आयल आ आब Talent केँ Hart कऽ Tact आ Management क बलपर कोनो व्यक्तिकेँ सम्मानित कयल जाइत छनि। हालहिमे श्री मन्त्रेश्वर झा जी कहलनि—राष्ट्रीय सम्मान लेल ओहन व्यक्ति सभकेँ नामित कयल जाइत छैक जकर योगदानक विषयमे जँ हमरासँ पूछल जाइत अछि तँ हम चुप रहि जाइत छी कारण कोनो ने कोनो विधिये मैथिलीक लेखक लोकनिक रचना गत 15 वर्षसँ पढ़िये कऽ स्थिति देखि लैत छी।'

उपर्युक्त उद्धरण हम एहिठाम एहि कारणे नहि देलहुँ अछि जे हम अपन लेखनक धार लेल श्यामपक्षकेँ किएक चुनलहुँ अपितु एहि कारणे देलहुँ अछि जे ई लोकनि मिथिला—मैथिली ओ मैथिलक असली हीरा—मोती सन रत्न छथि आ हिनके बनाओल आश्रयकेँ लऽ कऽ साहित्य संस्था ओ कीर्तिमानक चर्च हम सभ करैत छी मुदा अपना बेरमे सभटा बात बिसरि ज़ाइत छी।

प्रत्येक जीवनक दू आयाम होइत अछि मुदा मैथिल व्यक्तित्वक जे वाह्य परिचिति अछि तकर पहचान तँ होइत अछि आंतरिक सोच ओ व्यवहार केहन छनि ताहि पर। एहूपर अवश्य लीखल जयबाक चाही। एहि बिन्दुपर बहुत रास बात लीखल जा सकैछ मुदा हमर निर्णय रहल अछि–मृत व्यक्तित्वक सोच टा पर लिखल जयबाक चाही व्यवहार–व्यसनपर नहि। मुदा जे जीवित छथि तनिकर सोच, व्यवहार–व्यसनपर अवश्य लीखल जयबाक चाही जाहिसँ कि ओ व्यक्ति अपन दुनू पक्ष श्वेत ओ श्यामकेँ अपन आँखिये देखि सकथि तथा अन्तिमो समयमे कमसँ कम 'राम–राम' भजबाक अपेक्षा सद्मार्गक अनुशरण कऽ सकथि।

हम जीवनमे श्वेत–श्याम दुनू पक्षकेँ भोगने छी, देखने छी तँ एहने विषयवस्तुकेँ अपन लेखनमे समेटबाक प्रयास करैत छी। एहि प्रकारक लेखनकालमे जनिकापर हमर कलम चलैत अछि तनिक श्यामपक्षपर केन्द्रित अवश्य रहैत अछि मुदा हुनका अपमानित करब चेष्टा कथमपि नहि। आ तेँ हम जतऽ कोनो काज कयलहुँ अछि से अपन पूर्ण समर्पण एवं क्षमताक संग, ई हमर विश्वास अछि।

कतेक बेर एहन स्थिति आयल अछि जे हम अपन लेखनक कारणे घोर कष्ट भोगऽ लेल विवश भऽ जाइत छी मुदा हमर कलम आइ धरि नहि रुकल अछि आ ने हमर स्वरक त्वरा मद्धिम भेल अछि। तिरस्कार, उपेक्षा, घृणा, अपमान सब सहैत रहलहुँ मुदा कलम नहि रुकल अछि।

ई वर्ष हमर पूज्य पिता सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जन्म–शताब्दी वर्ष छनि। गत 3 नवम्बर, 2020 केँ हुनक अन्तिम प्रकाशित पोथी 'हस्ताक्षर'केँ स्वयं अपन प्रतिष्ठान 'शेखर प्रकाशन'मे अपनहि हाथेँ 'श्रद्धांजलि–स्मरण–शब्द'क संग लोकार्पित कयने रही! ई पोथी हमर

अछि आ जेँ कि हम हुनकेँ अंश छियनि तेँ हुनक स्वभावे जकाँ किछु अपन जीवनक गाथाकेँ प्रस्तुत करबाक प्रयास कयलहुँ अछि।

हमर पोथी (पुस्तिका) बहुत कम पृष्ठक होइत अछि, एकर कैक कारण, मुदा मूलमे हमर आर्थिक स्थिति रहैत अछि। पोथीक भूमिका ओ आवरण पोथीकेँ अयना सदृश प्रस्तुत करैत से हमर धारणा अछि। जँ पोथीक भूमिका नहि पढ़ल जाइत अछि तँ पोथीक गति ओहिना होइत अछि जेना बानरक हाथमे नारियर। तेँ हमर आग्रह रहैत अछि जे कोनो पोथी पढ़ी तँ सभसँ पहिने ओकर भूमिका अवश्य पढ़ी तखने विषय–वस्तु बुझबा योग्य होइत छैक। हमरा ईहो बूझल अछि जे एहि प्रकारक लेखककेँ मात्र मौखिक प्रतिक्रिया देल जाइत छैक, लिखित नहि। एहूमे साहसक काज होइत छैक। ओना हम मैथिलीक लेखक/पाठक दुनू वर्गकेँ 45 वर्षसँ देखि रहल छियनि, तेँ एतवे!

– शरदिन्दु चौधरी

31/08/2021

नवघर उठय–पुरान घर...!

नव वर्षक अवसर पर बहुत रास बधाइ आयल अछि। हम शुभकामना स्वीकार करैत अपने लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत छी। मुदा की ई नव वर्ष हमरा किछु दऽ सकत? प्रायः नहि।

नेनाकेँ जँ एहि अवसर पर बधाइ वा शुभकामना देल जाय तँ ओकरा हेतु अवश्य शुभ ओ फलदायी होयत ई हमर सोच ओ मान्यता अछि। हमरा की हम तँ आब ओहि अवस्थामे छी जतऽ गमयबाक अतिरिक्त किछु नहि भेटि सकैछ। आब तँ आँखि अपन नहि रहल, दाँत अपन नहि रहल, पयर सेहो जबाब दऽ रहल अछि। शक्ति घटले जा रहल अछि, स्मरणशक्ति सेहो जबाब दऽ रहल अछि। सेवा उपरान्त सरकार द्वारा जे कोरामीनक खोराक मासेमास भेटैत छैक सेहो नहि अछि। तखन तँ अप्पन हाथ जगन्नाथे टा ने जीवनक आधार। की आबो घर परिवार लेल अथवा समाज लेल जगन्नाथेकेँ कष्ट दैत रहियनि सेहो बधाइ आ शुभकामनाक बलपर।

हमरा जनैत नव वर्षक अवसर पर बधाइ ओ शुभकामना देबाक परिपाटी अपन शुभेछुकेँ स्मरण करबाक–करयबाक एकटा नीक प्रक्रिया थिक मुदा एहि नामपर कयल जा रहल क्रियाकलाप उचित अछि! हुड़दंग करब, मद्यपान करब, दुःख–सुखमे अलग रहब आ एहि अवसरपर आपकता देखायब की कहैत अछि–सोचबाक विषय थिक।

सहयोग–समन्वय, त्याग–समर्पण, आदर–सम्मान समाजसँ निपत्ता अछि आ 'Happy New Year' क हरकारासँ पूरा परोपट्टा

गुंजायमान अछि। हम माननीया प्रोफेसर श्रीमती चौधरी जी तँ छी नहि जे जीवन भरि मैथिली पढ़ौलहुँ नहि जांहि सँ मैथिली महाविद्यालयसँ रूसि गेलीह मुदा ओहि पदसँ अर्जित सुविधासँ एहू वयसमे facebook पर विभिन्न परिधानमे 'कजरा मुहब्बतवाला' गीत गाबि मस्त रहू। हम तँ जतवे कयलहुँ ताहिसँ पस्त छी तँ कतऽ सँ शुभकामना समेटि सकी।

धीयापूताकेँ बढ़बाक, जीवन संघर्षसँ लड़बाक छैक, शुभ आ फलदायी वस्तु प्राप्त करबाक छैक, त्याग–समर्पणक पाठ पढ़बाक, सहयोग–समन्वय की छैक से सीखबाक छैक, आदर–सम्मान की होइत छैक से बुझबाक छैक तेँ ओहि वर्गकेँ शुभकामना देल जयबाक आवश्यकता छैक।

हमरा सन–सन लोककेँ जे एहि अवस्थामे अबिते समाज द्वारा निरसि देल जाइछ, भार बूझल जाइछ, अनुभवहीन ओ बेकार बुझि अवडेरल जाइत अछि तकरापर एतेक महत्वपूर्ण शब्दक प्रयोग कऽ ओकर महत्ताकेँ कम नहि कयल जयबाक चाही। जँ हमर बात सत्य वा यथार्थ नहि लागय तँ 65 वर्षसँ ऊपरका लोकक अनुभवक लाभ लेल जा सकैछ चाहे ओ गरीब होथि वा धनीक। तेँ हम कहब 'नव घर उठय–पुरान घर.....।

01/01/2021

हमर अभाग : हुनक नहि दोष

जीवनमे बहुत रास काज एहन कयने छी जाहिमे हमरा कोनो प्रकारक पारिश्रमिक नहि भेटल। हँ, जिनकर काज कयलियनि से मठोमाठ भेल छथि आ आब हमरे बहुत तरह सँ परामर्श दैत छथि। हम चुपचाप सुनि लैत छी। नाम तँ कतहु नहियेे रहैत अछि जे किछु आर्थिको लाभ होइतय तँ जुरइतहुँ। मुदा आजुक युग 'मतलब निकल गया है तो पहचानते नहीं' वला छैक। जे–से, ई सभ जीवनमे चलैत रहैत छैक, युगकेँ आगाँ बढ़बऽ लेल ई सभ करय पड़ैत छैक।

हालमे हमरा एहने सन काज करबा लेल पारिश्रमिक/प्रमाणपत्र चेक रूपमे प्राप्त भेल से सुखद लागल। एकटा सम्पादक आ प्रूफरीडर जकर नाम नहि छपैत छैक तकरा सरकारी सेवक की मोजर दैत छैक से ज्ञान भेल।

मैथिली अकादमी प्रभुनारायण झा 'मैथिलीपुत्र प्रदीप' (ख्यात गीतकार ओ संत) पर एकटा विशेषांक पत्रिका निकाललक। अनुज रूपें श्री रमनानन्दजी आ श्री गोविन्द बहुत विनम्रतापूर्वक आग्रह कयलनि–भैया अकादमीक पत्रिकामे ततेक अशुद्धि रहैत छैक जे हमरा सभकेँ बहुत बात सुनय पड़ैत अछि, कृपया ई अंक अहाँ देखि दियौक।' आग्रह टारल नहि गेल। काज कऽ देलिऐक, सम्पादकमे तत्कालीन निदेशक श्री दिनेशचन्द्र झा (वरिष्ठ मैथिली सेवी?)क नाम छपलनि। चलू काज भऽ गेलै, हम निश्चिन्त भऽ गेलहुँ।

मुदा हमरा फेर एकटा तीर लगबाक छल से लागल। आश्चर्य नहि भेल, काज करयवलाक मूल्य कतेक होइत छैक से फेर एक बेर बूझल। हमरा अकादमी सँ एक चेक भेटल अछि, भऽ सकैए टी.डी.एस. क हिसाब लेल पैन कार्डक छायाप्रति सेहो मांगल जायत। हम एकरा प्रमाणपत्र स्वरूप राखब से कहि देलियनि अछि। एहि सम्बन्धमे हम एतवे कहि सकैत छी—'हमर अभाग, हुनक नहि दोष।' लियऽ, अहूँ देखू, हमर 68म वर्षमे प्राप्त भेल प्रमाणपत्र !

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank Of India

Sharadindu Kumar Chaudhary

Two hundred Eighty only

₹ 280

VALID UPTO ₹ 10 LACS AT NON-HOME BRANCH

SB ACCOUNT

PREFIX

17/08/2021

सम्पादक आ पाठकीय पत्र

डिग्री वा पद टाका–पैसा दऽ सकैत छैक, अधिकार दिया सकैत छैक मुदा व्यक्तिगत बौद्धिक छोटपना जे चरित्रमे रहैत छैक ताहि सँ छुटकारा नहि दिया पबैत छैक। ई सभ अनुभव तखन होइत छैक जखन अहाँ सामाजिक जीवनमे रहब। ओकरासँ जखन–जखन पाला पड़त तँ ताहीसँ कूही होइत रहब। ओहन व्यक्ति लेल की ओ तँ जीवन भरि ओही प्रकारक किरदानीसँ किलापर किला बनबैत रहत।

समय–साल पत्रिका बेस उठानपर रहय। सभ ओहिमे छपबा लेल व्याकुल रहथि (तथाकथित गुटबाजकेँ छोड़ि कऽ)। आजुक वरिष्ठ कवि शशि बोध मिश्र 'शशि' सेहो कहियो काल ओहिमे छपथि। ई बात आजुक दरभंगा स्थित एक पदाधिकारी–साहित्यकारकेँ नहि सोहाइत छलनि। प्राय: अपना पत्रिकामे स्थान नहि भेटनि तेँ। तखन ओ एकटा अभियान चलौलनि सम्पादक शरदिन्दु चौधरीक विरोधमे। कहियो दुर्बोध मिश्रक नामसँ कहियो अबोध मिश्रक नामसँ कविताक छीछालेदर करैत सम्पादककेँ सेहो गंजन करथि। हम हुनक सभ पत्रकेँ समय–सालमे छपैत गेलियनि। हुनक मोन बढ़ि गेलनि, पद आ धनक गर्मी एतेक रहनि जे हमरा पर जे लिखलनि से लिखलनि हमरा पिता स्वर्गीय सुधांशु 'शेखर' चौधरीक मादे पत्रमे लिखलनि 'जकर बापे झोरामे पोथी लऽ कऽ घुमि घुमि बेचैत छल तकर बेटाकेँ कतेक बुद्धि हेतैक।' ईहो पत्र समय–सालमे छपल। अन्तत: वैह हारि गेलाह आ पत्र लीखब बन्द कयलनि।

जेँ हुनका ई नहि अनुभव होयतनि जे कोनो सम्पादक् जखन स्वयं पहिल अंकसँ पत्रक सम्पादन प्रारंभ करैत अछि तँ पत्रकेँ नेना जकाँ पालित–पोषित करैत छैक आ लेखककेँ सेहो अपने लोक बुझैत छैक भने ओ अबंड किएक ने हो। हँ, एहि प्रकारक लेखक जे दू दर्जनसँ बेसी पोथी किएक ने लिखने हो अपन परिचित नहि बना पबैत अछि आ तेँ आइ फेसबुक पर कविता लिखैक क्रममे नाम सँ पूर्व लेखक लिखैत छथि। पद आ पैसाक धाहीमे लोक लोककेँ नहि चिन्हैत छैक मुदा सम्पादक अक्षर देखि अपन लेखककेँ चिन्हि जाइत अछि तेँ रचनासँ नीक ओकर परिचिति कायम करयवला पत्र छापि दैत छैक। हमरा जनैत जे सम्पादक अपना विरोधमे आयल पत्रकेँ नहि छपैत अछि ओ गलती करैत अछि, किएक तँ ओ सही अछि की गलत से पाठके निर्णय कऽ दैत छैक। हँ, एकटा बात आर कहि दी जे ओ लेखक तकर बाद समय सालमे रचना देब बन्द कऽ देलनि मुदा समय–साल बन्द भेलाक बाद जखन हम 'पूर्वोत्तर मैथिल'क सम्पादक भेलहुँ तँ अनुज केदार काननजी लग अपन रचना पठौलथिन पूर्वोत्तर मैथिलमे छपबा लेल। केदारजी हुनकर लिफाफकेँ दोसर लिफाफमे दऽ हमरा फोनपर ई कहैत–भैया छापि दिहक ई रचना' पठौलनि आ हम ओ छापि देलियनि। सम्पादक एहने जीव होइत अछि जे रचना देखि काज करैत अछि। ओहि समयमे अफसरीक धाहीमे छलाह, आब ओकर दुष्परिणामसँ जमीनपर छथि, नीक लिखैत छथि।

बात चलल अछि अक्षरसँ लेखककेँ चिन्हबाक तँ लगले एकटा खिस्सा आर कहि दी। एक दिन डेरापर बैसल रही तँ मधुकान्त झाजीक फोन आयल–'यौ प्रोफेसर साहेबक कविता किएक नहि छापि दैत छियनि?' हम आर गप्प सभ कऽ बातकेँ अनठा देलिऐक। फेर दोसरो

दिन हुनक फोन आयल। ओ बहुत कहलनि हे छापि दियनु ने तँ निरंतर फोन करैत रहताह। 'ताधरि मधुकान्तजी समय–सालक प्रधान सम्पादक नहि रहथि, व्यवस्था बात, टाका–पैसा सभ किछु हुनकर आ सम्पादन हम करैत रही। कविता कहू की गीत, जे मानल जाय, हारि कऽ दू टा समय–सालमे छापि देलियनि। किछु दिन बाद एकटा पोस्टकार्ड आयल ओहि रचनाक प्रशंसा करैत। हमरा आश्चर्य भेल। हम बड़ा गौरसँ पोस्टकार्डकेँ उनटा–पुनटा कऽ देखय लगलहुँ। तुरत कविजीक स्तर बुझा गेल (ओना पहिनहिसँ जनैत रहियनि)। पत्रमे पता छल झंझारपुर, मधुबनीक आ मोहर छल राजेन्द्र नगर, पटनाक। तखन अक्षर पर ध्यान गेल तँ प्रकट भऽ गेल जे प्रोफेसर साहेब स्वयं अपन प्रशंसामे पत्र लीखि पठौलनि अछि जेना आइ अपन Post पर स्वयं 'लाइक' कऽ फेसबुक पर कोनो बात लोक कहैत अछि। हँ, ओ दू कविता छपलासँ श्रीमान्‌केँ एतेक जोश अयलनि जे ढौए–ढाकी अकर–बकर लीखि किताब छपा लेलनि आ तीन बेर साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक फाइनल राउण्ड धरि उठा–पटक कयलनि। हिनको पोथीक संख्या सैकड़ा धरि पहुँचऽ पर छनि भने ओहिमे ताकब तँ किछु नहि भेटत। आब कहाँदन मंचपर जयबासँ पूर्व वा समारोहमे गेलापर अपन रचनाक फोटोकापी बटने फिरैत छथि।

25/08/2020

सदाचार ओ भ्रष्टाचार

घटना 1981क अक्टूबरक थिक। रिजर्व बैंक पटनामे नोकरी लेल साक्षात्कार देबऽ गेल रही। 'एम्प्लाइमेंट एक्सचेंज'क माध्यमे लिखित परीक्षा भेल छल। 230 गोटेमे सँ तीन पदक लेल 6 गोटे साक्षात्कारमे बजाओल गेल रही। प्राप्तांकक हिसाबें हम दोसर स्थानपर रही।

तीन गोट साक्षात्कार लेनिहारमे कलकत्ताक एकटा सेन साहेब, एक गोटा आर सहित पटना रिजर्व बैंकक महाप्रबंधक एस.के. सिन्हा शामिल छलाह। हमरासँ बेसी प्रश्न सिन्हाजी पूछि रहल छलाह। पुछैत–पूछैत अकस्मात बजलाह–मिस्टर चौधरी, भ्रष्टाचार के बारे में आप क्या कहेंगे? 'जावत हम किछु उत्तर दियनि केबिनमे किछु फाइल लेने एक व्यक्ति पैसल आ श्री सिन्हाकेँ सम्बोधित करैत बाजल–सर इस महीने सारा लोन डिडक्ट करने के बाद आपको सिर्फ 400/– रुपये मिलेंगे! सिन्हाजी तपाकसँ बजलाह–कम से कम 2000/– पेमेन्ट करो। बेटा होस्टल में है उसे भेजना है। बेटी को भी भेजना है कुछ। समझ गये न।' ओ व्यक्ति 'ठीक है' कहैत केबिनसँ निकलि गेल।

ओकरा जाइते सिन्हाजी हमरा दिस उन्मुख होइत बजलाह–हँ तो हमलोग भ्रष्टाचार पर बात कर रहे थे, कुछ कहिये! 'हम कहलियनि–सर, आज के जमाने भ्रष्टाचार और सदाचार में गहरा सम्बन्ध है। इस पर बहस करना अंतहीन होगा।' ओ कहलनि–कोई उदाहरण देकर भ्रष्टाचार और सदाचार पर प्रकाश देंगे?'

हम तपाक सँ उत्तर देलियनि–नियमतः इस महीने आपको

सिर्फ 400/—रुपये मिलने चाहिये थे, चूँकि आप यहाँ के सर्वेसर्वा हैं इसलिए आपको आपके प्रभाव से 2000/— मिलेंगे। यह आचरण आपके लिए सदाचार है लेकिन दूसरे व्यक्ति को 'यह भ्रष्टाचार है' समझ में आयेगा।'

हमरा ई कहैत केबिनमे दू मिनट धरि चुप्पी पसरि गेल। श्री सिन्हाक चेहरा लाल भऽ गेलनि। ओ एकटा—दू टा प्रश्न पूछि कहलनि—ठीक है जाइये, खबर किया जायगा।'

हम बाहर निकलि कने आगाँ बढ़ले रही की श्री सेन, जे साक्षात्कार बोर्डमे छलाह, हमरा हाथसँ इशारा कऽ बजौलनि आ कहलनि—अरे भाइ तुम्हारा तो सेलेक्शन होना ही था, ऐसा उत्तर देकर तुमने जुलूम कर दिया। सिन्हा हरामी किसिम का आदमी है अब तुम्हारा नाम कट जायेगा।'

श्री सेनक आपकता नीक लागल मुदा नोकरी होयत वा नहि तकर चिन्ता नहि भेल। ठीके हमर सेलेक्शन नहि भेल ओतऽ।

जहिया—जहिया ई घटना याद पड़ैत अछि तँ लगैत अछि हम तहियो सही रही आ आइयो सही छी, कारण फेसबुक पर हमर मित्र 2400 क संख्यामे छथि जाहिमे सँ सय सवा सय एहन छथि जिनका हम व्यक्तिगत रूपें जनैत छियनि। ई जावत पदपर रहलाह भ्रष्टाचारक गंगामे डूबकी लगबैत रहलाह, अनैतिक रूपें अर्जन कऽ मठोमाठ बनल छथि, अनका चोर—बइमान कहैत दिन बितबैत छथि आब।

एकरे कहैत छैक—चोरों को सारे नजर आते हैं चोर।

12/05/2021

मैथिलीक बदलैत स्वरूप

मैथिली बदलि रहलीह अछि। एहि कारणे नहि बदलि रहलीह अछि जे हुनक बजनिहारक संख्या बढ़ि रहलनि अछि, एहू कारणे नहि जे ओ सम्पन्न भऽ रहलीह अछि। एहि कारणे ओ बदलल सन बेर–बेर लगैत छथि जे हुनक जे वाहक छथिन तनिकर ने व्यक्तित्वक ठोस आधार छनि, ने विचार करबाक क्षमता स्थिर छनि आ ने सम्प्रेषणक प्रक्रियाक कोनो आधार छनि। तेँ हमरा विचारें ओ सभ रूपमे बदलैत ज़ीवित रहि सकैत छथि मुदा एहि स्थितिमे पढ़यवला विद्यार्थी, शोधार्थी ओ प्रतियोगी परीक्षाक विद्यार्थीकेँ बड़ कठिनता भऽ रहल छैक। कारण, तीन तिरहुति तेरह पाकवला मैथिली ओकर पाठ्यक्रममे पैसि रहल छैक। ओ एकटा आधार मंगैत छैक, ओकर ओही आधार पर सफलता–असफलताक निर्णय कयल जाइत छैक। मुदा मैथिली बदलि रहल छथि–ई पोथीमे, पत्रिकामे आ आब तँ फेसबुकक (फेकबुक) विश्व माध्यमे ई अपन स्वरूपक ततेक ने रूप देखा रहलीह अछि जे चिन्हब कठिन अछि जे कोन मैथिली छथि ई।

चिन्ता हमरा एहि बातक नहि अछि जे ई किएक भऽ रहल अछि। चिन्ता एहि बातक अछि जे जे व्यक्ति सभ चारि पांती शुद्ध नहि लीखि सकैछ से सभ जोर–जोरसँ एकर पक्षमे बाजि रहल छथि, लीखि रहल छथि आ हुनका संग–संग ओहो व्यक्ति सभ दौड़ि रहल छथि जे मैथिलीकेँ प्रतिष्ठित, सुसज्जित करैत मान–मर्यादा दियबैत रहलथिन अछि।

हम व्यक्तिगत रूपें किनकोपर कटाक्ष वा प्रहार तावत तक नहि करैत छियनि जावत धरि ओकर असरि हमरापर नहि पड़ैत अछि आ जखन असह्य भऽ जाइत अछि तखन अपन विचार प्रकट करैत छी। मैथिलीक एहि स्थितिकेँ देखैत छी तँ स्वयं लज्या होइत अछि जे आखिर एना किएक भऽ रहल अछि। सोचैत-सोचैत एकेटा बात सोझां अबैत अछि जे व्यक्ति हावी भऽ गेल अछि, मैथिली, पाछाँ चल गेलीह अछि प्राय: तेँ ई स्थिति अछि। सभसँ आश्चर्य तखन लगैत अछि जखन सभ सक्रिय लोक अनकासँ शुद्ध, बोधगर, फरिछायल, स्पष्ट, परिपक्व अकाट्य, संयत भाषा ओ विषय-वस्तु पयबाक अपेक्षा रखैत अछि आ अपना बेरमे बिनु शब्द प्रयोगक व्यवहार बुझने प्रतिक्रिया व्यक्त कऽ अपन श्रेष्ठताक दावा करैत प्रश्न करैत अछि। एतऽ मैथिलीक गप्प तऽर पड़ि जाइत अछि आ श्रेष्ठताक दावा उपर भऽ जाइत अछि। हम मात्र दू टा उदाहरण देब जाहिसँ अहाँ बुझि सकैत छी जे ई कोना होइत छैक। हमरा प्रेसमे माननीय (सश्रद्धा नमन करैत) श्याम दरिहरेजीक पोथी 'घुरि आउ मान्या' उपन्यास छपैत छलनि। सभ किछु भऽ गेलाक बाद कौभरपर ओ अपन नाम पोथीक नामसँ पैघ अक्षरमे देबा लेल कहलनि। हम नहि माननलियनि मुदा ओ आपरेटरसँ कहि पैघ अक्षर करबा लेलनि। बादमे हम ओकरा फेर छोट करबा देलिऐक किएक तँ पोथी प्रकाशनक ई नियम कहू वा 'नार्म' कहू, छैक तेँ। हुनका ओ खराब लगलनि आ तेँ अगिला जे खंड वा आन पोथी रहनि से आन ठाम छपलनि! हुनक एकटा पोथी अयलनि कविता संग्रह ताहिमे 50 प्वाइंट अक्षरमे ऊपरमे लीखल छल श्याम दरिहरे आ नीचांमे 20 प्वाइंटमे पोथीक नाम 'क्षमा करब हे महाकवि' रहैक। एतऽ हमर कहबाक अभिप्राय यैह अछि जे मात्र शब्दक आकारसँ ई कहल गेलैक, लेखक पहिने, दोसर स्थानपर पोथी आ तकर बाद मैथिली। पोथीक आवरण अयना सदृश होइत छैक से देखा

देल गेलैक जे रचना पैघ की लेखक। एहि स्थितिमे रचनाक मूल्य कतेक रहि जाइत छैक मात्र एकटा प्रक्रियाक अवडेरि देने।

दोसर उदाहरण देब आजुक सम्पादकीय लेखनक। सम्पादकीयक ऊपरमे रहैत अछि सम्पादकक फोटो आ तकर नीचामे सम्पादकीय। एहन सन तात्पर्य पहिने हमर फोटो देखू तखन विषय बुझबै। एतहु विषय–वस्तु आ मैथिली तर पड़ि जाइत अछि आ व्यक्ति हावी भऽ जाइत छैक। सम्पूर्ण मैथिलीक व्यवहारक संग येह भऽ रहल छैक। अर्थात हम जाहि प्रकारें लीखि दैत छी सैह मैथिली। भारत स्वतंत्र अछि, ओ एकर नागरिक स्वच्छन्द, जे फुराय सैह करू। हमरा जनैत जतऽ व्यक्ति हावी भऽ जाइत अछि ततऽ ओकरा द्वारा प्रेषित विचारसँ समाज, भाषा प्रभावित नहि होइत छैक। पहिने भाषा सोचल जाइत छल, विचार स्थिर कयल जाइत छल आ तकरा बाद सम्प्रेषित कयल जाइत छल तेँ समाज पर ओकर असरि पड़ैत छल। किएक सम्पादनक क्षेत्रमे आदरणीय रमानाथ झा, सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाम लेल जाइछ आ हुनका लोकनिक लीकपर सैकड़ो लेखक–साहित्यकार चलि कऽ अग्रिम पांतीमे बैसल छथि। किएक यात्री, किरण, मधुपक छाया पाबि बहुतोक कायाकल्प भऽ गेलनि, एहूपर विचार करबाक चाही।

जनिका कौमा, पूर्ण विराम, रिक्त स्थान, पैघ–छोट–अक्षरक व्यवहारक ज्ञान नहि, शब्द व्यवहारक ज्ञान नहि, वर्तनीक ज्ञान नहि से ज्ञान दैत छथि तँ मात्र दुःख होइत अछि, क्रोध नहि।

हँ, एकटा बात अवश्य कहब जे भाषाक सौंदर्यीकरण, शुद्धिकरण, संयत, पठनीय, बोधगम्य बनयबाक गुरुतर काज कोनो कुशल सम्पादके कऽ सकैत छथि भाषाविद्, भाषा वैज्ञानिक नहि से

'मिथिला दर्शन'कें देखि कऽ बूझल जा सकैत अछि। एहि विषयपर आदरणीय बासुकी नाथ, भीमनाथ झा, वीरेन्द्र मल्लिक, कीर्तिनारायण मिश्र, मित्र विभूति आनन्द आ अनुज केदार कानन, प्रदीप बिहारीक चुप्पीपर अचंभित छी, कारण भाषाक सेवक, रक्षक ओ अद्वितीय लेखकक रूपमे ई लोकनि प्रतिष्ठित छथि आ भाषाकें कोना मान–मर्यादा भेटय ताहि लेल सतत् प्रयत्नशील सेहो रहैत छथि। एहि विषयक घमर्थन सुनैत छी, पढ़ैत छी, दुःख होइत अछि। मुदा जतऽ पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू आ वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जे देशक सर्वोच्च पदधारक छलाह आ छथि तनिका खुल्लम–खुल्ला सार्वजनिक मंचपर गारि पढ़ल जाइत हो ततऽ भाषा संबंधी विचार पर विचार हो से कोना संभव होयत, से कोना कहल जा सकैछ।

(06/01/2021)

पैघत्वक अकारण प्रदर्शन किएक?

श्री कीर्तिनारायण मिश्रजीक कृपा हमरापर रहलनि अछि आ बरमहल फोनसँ गप्प करैत रहलाह अछि। अपन स्नेहक आपकतासँ सराबेर करैत रहलाह अछि। मुदा निचलका खाढ़ीमे स्खलित मानसिकताक जे बयार बहि रहल अछि ताहिसँ वृद्धावस्थामे बेस प्रभावित भेलाह अछि आ किछु–किछु एहन काज कऽ बैसैत छथि जे अपने तीरसँ स्वयं बेधा जाइत छथि। मुदा इतिहास बनयबाक लौल आ पैघत्वक प्रदर्शन करबामे चुकैत नहि छथि। हुनक पोथी सभ बेस प्रेरणादायी ओ स्तरीय छनि तखन एहन आचरण करब किएक नीक लगैत छनि, वैह जानथि।

एक दिन ओ फोनपर हमरा अनायास डाँट–फटकार करय लगलाह आ कहलनि–अहाँ हमर अकादमीसँ पुरस्कृत पोथी 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' ककरासँ पूछि कऽ छापि लेलहुँ? के ई अधिकार देलक? अहाँ लिखित रूपमे हमरासँ माफी मांगू आ ओकर कापी साहित्य अकादमी दिल्लीकेँ पठौबियौक। ओ आर कटू बात सभ कहलनि आ हम सभटा सुनैत रहलहुँ। जखन हुनकर बात खतम भऽ गेलनि तखन हमर बेर छल। हम हुनकासँ बेसी क्रोधित होइत उत्तर देब शुरू कयलियनि आ सभ टा बात कहैत गेलियनि तखन अपन पैघत्वक प्रदर्शन करय लगलाह आ वार्तालाप हुनक पत्नी द्वारा फोन छीनि लेल गेला सँ अन्त भेल।

असलमे गप्प ई भेल छलै जे हुनक उक्त पोथी समाप्त भऽ गेल छलनि तेँ ओ फोन कयलनि जे ई पोथी अहाँ अपन खर्चसँ छापि दियौक आ किछु कापी (20–25) टा हमरा दऽ देब। हम अनुरोध स्वीकार करैत

कहलियनि–अहाँ पटना आबी तँ पोथी लेने आयब।' ओ सपत्नीक पटना अयलाह आ जमाल रोड स्थित एकटा होटलमे टिकलाह। ओ हमरा बजौलनि। हम गेलहुँ तँ ओ पूर्व प्रकाशित पोथी देलनि। हम कहलियनि–एहिमे जे किछु परिवर्तन होइक से कऽ दियौक आ पोथी छपबाक अधिकार दू पांतीमे सेहो लीखि दियौक।' ओ सभ लीखि कऽ पूर्व प्रकाशित पोथी पत्नीक सामनेमे देलनि। हम पोथी 'शेखर प्रकाशन'क बैनरमे छपलहुँ आ हुनका 25 टा प्रति पठा देलियनि। ओ पोथीक प्रशंसामे पत्रो लिखलनि।

असलमे ओ साहित्य अकादमी गेल रहथि ओहि पोथीक हिन्दी अनुवादक क्रममे अनुनय–विनय करय जे मैथिलक स्वभाव छैक। ओतऽ कहल गेलनि जे एहिपर तँ शेखर प्रकाशनक अधिकार छैक ओकरासँ अनुमति दियाउ तखन ई काज होयत। एही क्रममे ओतऽसँ फोन द्वारा डाँट–फटकार करय लागल छलाह। तखन अन्तिम जे हमर उत्तर छल से हुनका बेधि देलकनि–अहाँ जँ चाही तँ अपन अनुमतिक पांती संग अपन सभ पोथी कीनि कऽ लऽ जा सकैत छी। 'एहि पर पत्नी फोन लऽ लेलथिन जखन कि ओ तीन सयमे सँ 50 टा पोथी हमरासँ तावत धरि लऽ चुकल छलाह।

एक बेर ओ एना अपमानित करतथि तँ बुझितहुँ असलमे हुनका मोनमे छलनि जे हम पैघ छी डाँटि देबनि तँ सकपका जयताह मुदा से बात नहि एहैक। एहिसँ पूर्वो ओ एक बेर एहिना कयलनि। चेतना समिति, पटना आयल छलाह तँ हमरा भेंट करय साँझमे ओतऽ बजौलनि। हम ओतऽ पहुँचलहुँ। विजयबाबू (अध्यक्ष)क दरबार लागल छल। जाइते कीर्ति बाबू पूछलनि–यौ, अहाँ जे 10 टा पोथी ध्वस्त होइत शान्तिस्तूप (पहिल संस्करण) मंगौलहुँ तकर छौ सौ टका एखन धरि किएक नहि देलहुँ।' हमर सोझ उत्तर छल–डॉ. योगानन्द झा पोथी अनने छलाह,

हुनका दऽ देने रहियनि, नहि देलनि की? अहाँक सोझांमे फोन करैत छियनि।' ओ सकपका गेलाह, कारण योगाबाबू तहिया बेगूसराय मे 'पोस्टेड' छलाह आ ओतऽसँ पोथी आनि देने रहथि आ भुगतान सेहो जाकऽ कऽ देने रहथिन। आब हमर बेर छल। हम कहलियनि– श्रीमान्, छौ सय ले हमरा भरल सभामे अपमानित करबाक प्रयत्न कयलहुँ। आब हमर बेर अछि। अहाँ जे 'अर्थान्तर' पोथी हमरासँ छपौने रही जकर Bill 12500/- टकाक छलैक, ताहिमे सँ 9000/–टाका आदरणीय मोहन भारद्वाज जीक सोझांमे देने रही, सभ पोथी घर तक पहुँचबा देलहुँ, तकर शेष टाका आइ धरि किएक नहि देलहुँ सेहो एतहि लोकक सोझांमे कहि दियऽ।' ओ वेपर्द भऽ गेल छलाह, किछु नहि बजलाह आ हम ओतऽसँ अपन दोकानपर वापस आबि गेलहुँ। आखिर एहि तरह काज करब ओहन पैघ साहित्यकार भऽकऽ किएक करैत छथि से नहि बुझबामे अबैत अछि। की वयसमे हम हुनकासँ छोट छियनि तेँ की अपन धौंस जमयबाक प्रवृतिकेँ उजागर करबाक छलनि।

साहित्य अकादमी चेतना समितिक प्रेक्षागृहमे हुनक 'मीट द आर्थस' आयोजन कयने रहनि। संयोगसँ हम सेहो ओतऽ उपस्थित रही। संचालन हिन्दीमे होइत रहैक। कीर्ति बाबू सेहो 'हिन्दी–मैथिली' मे बजलाह। दावी जे हिन्दी–मैथिली दुनूक हम लेखक छी मुदा राजकमल–यात्री छोड़ि ककर हिन्दीमे कोन स्थान रहलैक से देखल–बूझल अछि। जखन प्रश्नोत्तर प्रारंभ भेलैक तँ अनेक प्रश्न पूछल गेलनि। हमहूँ ठाढ़ भेलहुँ। हमरा ठाढ़ देखिते ओ अकबकाइत बजलाह–प्रणाम शरदिन्दुजी।' सभक नजरि पाछाँमे ठाढ़ हमरापर अटकि गेलैक। हमर बेधक आ सटीक प्रश्न छल–अपने एतेक श्रेष्ठ साहित्यकार छी जे आइ अपनेपर साहित्य अकादमी सन शीर्ष संस्था ई कार्यक्रम

आयोजित कयलक अछि। मैथिलीमे अपनेक बेछप स्थान अछि तखन अहाँ अपन नामपर जीविते किए 'कीर्तिनारायण मिश्र सम्मान' प्रारंभ करौलहुँ, की अपनेकेँ भय अछि जे मरणोपरान्त क्यो स्मरण नहि करत तेँ जीविते अपन प्रचार–प्रसार देखबाक सेहन्ता छल? हमर एहि प्रश्नपर ओ विचलित भऽ उठलाह आ बजलाह–हमर पारिवारिक सदस्यक इच्छा रहनि।' हम कैक टा पूरक प्रश्न कयलियनि जाहिसँ ओ आर विचलित भऽ उत्तर देलनि–हम पुनर्विचार करब।' हम बैसि रहलहुँ मुदा चेतना समितिक सम्पूर्ण पदाधिकारी एकर विरोध करय लगलाह आ ओतऽ स्वर गूँजय लागल–ई सम्मान कोनो हालतिमे निरंतर चलैत रहत। एकर कारण रहैक ओ चेतना समितिकेँ पुनः डेढ़ लाख टाका पुरस्कार राशि बढ़यबा लेल टाका लऽ कऽ आयल रहथिन।

दोसर दिन अखबारमे एहि विषयक समाचार छपल जाहिमे आहे–माहे मे भाग लेल शरदिन्दु चौधरी सेहो शामिल छलाह सैह मात्र छलैक। कीर्ति बाबूक प्रति आइयो हमरा हृदयमे अशेष सम्मान अछि आ रहत, कारण ओ एकटा मैथिली साहित्यक स्तंभ छथि।

25/08/2021

बइमान होयबाक घोषणा

आदरणीय डा. रमानन्द झा 'रमण' 'मैथिली ओ राजनीति' लऽ कऽ विशेष चर्चामे रहैत छथि मुदा ककरो हेरायल–बिसरल रचनाकेँ बेर पड़लापर तेना प्रस्तुत करैत छथि जे मोन प्रफुल्लित भऽ जायत। हँ, इतिहास बनयबाक अभियानी लेखक लोकनि कैक बेर अस्वीकार कयल गेलाक बादो अपन रचनाकेँ वही–खाता जकाँ लाल कपड़ामे बान्हि कऽ जोगौने रहैत छथि।

श्री रमणजी साहित्यिकी (सरिसवपाही) संस्थाक बैसकमे भाग लऽ कऽ आपस पटना आयल छलाह। कार्यालयमे अबिते कहलनि–"अँय यौ, साहित्यिकीक पैसा किएक नहि पठा दैत छियनि। श्री जगदीश मिश्रजी माइकपर लोकक सोझांमे कहलथिन जे शरदिन्दुजीकेँ आब कहियो पोथी नहि पठयबनि ओ बेचि कऽ पोथीक दाम नहि देलनि।" पूर्वमे कहि चुकल छी जे 'रमणजी' राजनीति 'अवश्य' करैत छथि ककरो चरित्र–हनन कहियो नहि करैत छथिन अपितु मदतिये करैत छथिन। हुनका ई बात बहुत खराप लगलनि तेँ हमरा आबि कहलनि। हम हुनका एतवे कहलियनि हम जकरासँ पोथी मंगैत छियनि पाइ अवश्य दऽ दैत छियनि से अहूँ जनैत छी आ चुप भऽ गेलहुँ।

ई बात हमरा बहुत खराप लागल जे माइकपरसँ हमरा बइमान घोषित कयल गेल। हम जेँ कि पोथी नहि मंगौने रहियनि तेँ पाइ पठेबाक प्रश्ने नहि रहैक।

हम एहि घटनासँ अपन बइमान नहि होयबाक प्रमाण तकबामे लागि गेलहुँ। जे पता लागल से एहि प्रकारें अछि–जगदीश बाबू ख्यात

साहित्यकार श्री अशोक जीकेँ कोनो 10 टा पोथी हमरा देबऽ लेल कहलथिन। अशोकजी किछु दिन ओ पोथी अपना लग रखने रहलाह, अन्तमे शिवकुमार जीकेँ विद्यापति–भवनमे दऽ देलथिन। किछु अन्तरालक बाद पोथी बिकयलापर ओ शिवकुमारजी सँ टाका सेहो लऽ लेलथिन मुदा समयाभाव वा अन्य कारणे जतऽ सँ पोथी आयल रहैक ओतऽ नहि पहुँचौलथिन। ई बात स्वयं पता लगयबाक क्रममे अशोकजी हमरा कहलनि। क्रोध तँ हमरा बहुत भेल मुदा हम ई गप्प मात्र 'रमणजी' केँ कहि देलियनि।

एकर परिणाम साहित्यिकी संस्थाकेँ भोगऽ पड़ि रहल छैक। बहुत अवसर आयल जे बेस मात्रामे साहित्यिकीक पोथीक मांग हमरासँ भेल मुदा जे संस्था सार्वजनिक रूपें बिना हमरासँ किछु पूछने हमरा बइमान घोषित कऽ देलक तकरासँ पोथी मंगौनाइ हमर स्वाभिमानक विरूद्ध छल। एहिसँ पूर्व आदरणीय आनन्द मिश्रजीक पोथी अपन प्रिय शिष्य सुधीर कुमार झा (जनिका कोरोना अपन ग्रास बना हमरा अत्यन्त मर्माहत कयलक अछि) सँ 10 प्रति मंगौने रही मुदा पोथी प्राप्त करबामे हुनका जे कठिनता भेल रहनि से सुनि घोर आश्चर्य भेल एवं संस्थाक लापरवाही सँ अवगत भेल रही। मैथिली लेखक संघक आयोजनमे कहाँदन 12–13 कार्टून पोथी श्री महारूद्रजीक दोकानमे आयल रहनि आ बादमे अशोकजीक घरमे महीनो शोभायमान रहलनि मुदा हमर स्वाभिमान ओ पोथी सभ बिक्री हेतु लेबऽ सँ मना कऽ देलक। जँ हमरा एना सार्वजनिक रूपें बेइज्जति नहि कयल जइतय तँ कतेको पाठक सभ ओ पोथी लऽ लेने रहितथि आ संस्थाकेँ लाभ भेल रहितैक। एहिमे के दोषी, के बइमान, के उत्तरदायित्वहीन से साहित्यिकी सोचय वा सम्पूर्ण लेखक/पाठक समाज सोचय! हम तँ बइमान घोषित कइये देल गेल छी। आ की नहि?

27/08/2021

हमर अभाग : हुनक सौभाग्य

क्षमा मांगब साहसक काज थिक आ सार्वजनिक स्थलपर क्षमा मंगलाक बादो गंजन करब कमजोरीक लक्षण। जखन कि अपराध गंभीर नहि मात्र चूक भऽ गेल हो। मुदा पैघत्वक प्रदर्शनक मोह, विद्वताक धाह आ प्रोत्साहन सँ क्षमा समान शब्दक महत्ता नहि रहि गेल छल से एक बेर सार्वजनिक स्थलपर भेल छल।

चेतना समितिक वार्षिक विद्यापति स्मृति पर्वक पहिल दिनक कार्यक्रम बुद्ध मार्ग पटनाक' स्काउट एण्ड गाइड' प्रांगणमे चलि रहल छल। उद्‌घाटनक बाद सम्मान ओ पुरस्कार नामित व्यक्तिकेँ देल गेलनि आ तकर बाद स्मारिकाक लोकार्पण भेल। स्मारिकाक हम सम्पादक रही आ स्वेच्छापूर्वक अपन सहयोगक लेल दोसर व्यक्तिक चयन करबाक अधिकार भेटल छल आ तकर परिपालन करैत पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक डा. सत्यनारायण मेहताकेँ अपना संग कऽ लेने रहियनि। जेँ कि सम्पादनक भार भेटिते हमरा मोनमे आयल जे किएक नहि UPSC क पाठ्यक्रमक आधारपर स्मारिका निकाल जाय तेँ ई निश्चय कयलहुँ। श्री मेहताजी जेँ कि मैथिलीक वरिष्ठ प्राध्यापक आ एहिसँ पूर्व UPSC क एक बेर 'प्रश्नपत्रक सेटर' भऽ चुकल छलाह, से हमर सूत्र कहने छल तेँ हुनक चयन सहयोगीक रूपमे कयलहुँ आ कार्य योजना बनौलहुँ।

एहि सम्बन्धमे हमरा सभकेँ जे एहि काजक लेल उपयुक्त बुझयलाह हुनका लोकनिसँ आलेख मंगलियनि आ ओ लोकनि सहयोग

सेहो कयलनि। एहि काज हेतु हम दुनू अपन–अपन काज बाँटि लेलहुँ। UPSC क हेतु श्री मेहताजी भार लेलनि आ अन्य आलेख–स्तंभ आदिक भार अपनापर लेलहुँ। स्मारिकामे कतेक झंझटि होइत छैक से सभकेँ बूझल छैक। स्व. जगदानन्द झा जीकेँ, श्री गजेन्द्र नारायण चौधरी, डा. बासुकीनाथ झा, श्री विजयनाथ ठाकुर, स्व. जटाशंकर दास प्रभृति चेतना समितिक सम्मानित लोकनिक स्मारिकाक सम्पादक रूपमे केहन योगदान देने छिऐक से जँ ओ लोकनि लिखने रहितथि तँ हमरो मोजर होइत से हम मानैत छी। मित्र विवेकानन्द झा (वर्तमान अध्यक्ष)क कहलापर स्मारिका सम्पादनक भार नहि लेलियनि तेँ प्रायः हमरासँ रुष्ट छथि। जे–से, ई विषयांतर भऽ रहल अछि तेँ मूल बातपर आबी।

UPSC सँ सम्बन्धित 11 टा आलेख हम मेहताजीकेँ दऽ देलियनि आ शेषक सम्पादन हम कयलहुँ। जँ कि मेहताजीकेँ अपन सवारी रहनि तेँ प्रेसक काज अपन विश्वविद्यालय जयबाक क्रममे कऽ लेथि। स्मारिका छपयकालमे एगारहो लेख अछि ने हम पुछलियनि।' ओ कहलनि–हँ। हम निश्चिन्त भऽ गेलहुँ। एहि सामग्रीमे एक टा आलेख आद. डॉ. फूलचन्द्र मिश्र रमणजीक सेहो रहनि। पर्वक पहिल दिन मेहताजी प्रेस गेलाह आ दस टा स्मारिका लोकार्पण लेल लऽ अनलनि आ आयोजककेँ दऽ देलथिन। लोकार्पणमे मंचपर हम स्वयं नहि जा कऽ मेहताजीकेँ पठौने रहियनि, कारण ओ पहिल बेर सम्पादनसँ जुड़ल रहथि आ हम एहिसँ पूर्व पांच बेर सम्पादन कऽ चुकल छलहुँ। लोकार्पण भऽ गेलैक।

ठीक एकर पांच–दस मिनट बाद डा. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' हमरा घेरि लेलनि, संगमे डा. भीमनाथ झाजी सेहो रहथिन। ओ क्रोधित होइत प्रहार कयलनि–अयँ यौ, हमरा बेइज्जति किएक कयलहुँ, जखन हमर रचना छपबाक नहि छल।' हम बात नहि बुझि सकलहुँ।

पुछलियनि–की भेल? 'ओ आर तमकैत हमरा गंजन करय लगलाह। तखन हमरा बात बुझबामे आयल। ओ दुनू स्मारिका देखि लेने छलाह जखन कि सम्पादक होइतो हम तावत धरि मुद्रित स्मारिका देखनहुँ नहि रही। हम कहलियनि–स्मारिका देखब तखन किछु कहब मुदा ओ नहि मानलाह आ हमर गंजन जारी रहल। अन्तमे हारि कऽ हम हाथ जोड़ि क्षमा मंगलियनि–हमरासँ चूक भऽ गेल क्षमा कऽ दियऽ। चारूकात जमा भऽ गेल छल लोकसभ पंडालमे। भीम भाइ बीचमे लेसि देलथिन–ई श्यामपक्षपर बेसी ध्यान दैत छथि तेँ ई सभ भेल।' हुनका एतवा कहिते रमण जी आर धधकि उठलाह। हम हाथ जोड़ने ठाढ़ आ ओ बजैत रहलाह। जखन हम अधीर भऽ उठलहुँ तखन हमर सम्पादक जागल आ तनि कऽ बाजि उठल–हम सम्पादक छलहुँ जे ठीक बुझायल से छपलहुँ, आब कहू की कहबाक अछि!' हुनक स्वर नम्र भऽ गेलनि आ तत्क्षण रचना घुरयबाक मांग कयलनि। हमर उत्तर सुनितहि भीमबाबू ओतऽसँ ससरि कऽ निकलि गेलाह। हम कहलियनि–ओ सभ एखन प्रेसेमे छैक, हम ताकि–हेरि कऽ पठा देब। ओहो चुप भऽ गेलाह, पाछाँ घुरलाह तँ भीम भाइकेँ नहि देखलथिन तँ ओहो ससरि गेलाह आ बात समाप्त भऽ गेल। हमर क्षमायाचनाक कोनो असरि नहि, सम्पादकक अधिकारक सामने विवश भऽ गेलाह।

हमरा आश्चर्य लगैए जे वैह दुनू गोटे पत्राकारिताक क्षेत्रमे योगदान (बात–बातपर बात–खंड–1 मे 'हम आभारी छी' आलेख देखल जाय) लेल जूरीक रूपमे हमरा सम्मान देबऽ लेल नामांकित कयने छलाह जे बादमे संस्थाक आपसी झंझटि आ हमर नाम हटा देबाक कारणे विद्यापति संस्थान, दरभंगासँ सम्बन्ध विच्छेद कऽ लेलनि। हमर क्षमायाचनापर किएक नहि सोचलनि सेहो सार्वजनिक स्थानपर जतऽ

पचासो लोक उपस्थित छल। आश्चर्य ईहो लगैए जे येह सभ क्षमायाचनासँ पूर्व पटना–जयनगर ट्रेनक ए.सी.क भाड़ा पता लगयबाक आग्रह कयने रहथि जखन कि एहि ट्रेनमे तहिया ए.सी. नहि रहैत छलैक। हँ, ई दुनू गोटे चेतना समिति दिससँ आमंत्रित रहथि, आमदनी बढ़ि जयबाक संभावना रहनि।

हम ओ आलेख नहि आपस कयलियनि आ रखने रहलहुँ। दोबारा ओ आलेख घुरयबाक तगादो नहि कयलनि। हम ओकरा 'मैथिली गद्य गौरव'मे शामिल कयलहुँ जे UPSC आ BPSC हेतु अपने सम्पादनमे तैयार कयने छी। एखन धरि गद्य गौरव पोथी 5500क लगभग प्रति बिकायल अछि। हमरा जनैत एहि संख्यासँ बेसी परीक्षार्थी 'श्री रमणजी'क ओहि आलेखसँ लाभान्वित भेल होयत, अगिला सेहो एक हजारक संख्यामे छपत अक्टूबर धरि। एहिना आ. भीम भाइक आलेख जे आ. श्री मलंगियाजीक व्यक्तित्वपर केन्द्रित छल से घर–बाहरमे छपय लेल देलथिन मुदा तीन अंकमे नहि छपलनि। ओ हमरा 'पूर्वोत्तर मैथिल' मे छपबा लेल पठौलनि। हम ओहि रचनाकेँ ससम्मान व्यक्तित्व फ्लैग लगा कऽ स्तंभ प्रारंभ कयलहुँ जाहि अन्तर्गत पाँच गोटेक व्यक्तित्वपर रचना छपल जावत हम पूर्वोत्तर मैथिलक सम्पादक रहलहुँ। ओहि स्तंभक अन्तर्गत आदरणीय मोहन भारद्वाजपर आलेख छपने रहिथिनि आ ओ हमरा बजा कऽ ई कहैत–आइ धरि हम एतेक काज कयलहुँ मुदा हमरापर कोनो पत्र–पत्रिका 'एक्सक्लूसिभ' रचना नहि छपने छल' बेस आभार प्रकट कयने रहथि। एहि प्रसंगमे 'मिथिला मिहिर साप्ताहिकक एकटा बात मोन पड़ैत अछि। आ. भीमभाइ मिहिर छोड़ि चल गेल रहथि। हमरा आ दिलीप जीकेँ की फुरल की ने कार्यालयमे ताला बन्द एकटा आलमीरा खोललहुँ तँ ओहिमे बहुत रास बिना खोलल बंद लिफाफ भेटल छल। ओकरा सभकेँ खोललहुँ,

अधिकांश लिफाफ श्री रमानन्द झा रमणक, जे तहिया डॉक्टर नहि भेल छलाह आ किछु जे आइ डॉ. तारानन्द वियोगी छथि, विभारानी आदिक रहनि। बादमे पता लागल जे ओ सम्पादककेँ बिनु देखौने रिजेक्ट भऽ डाकखानाक ओहि बंद ढ़ोलमे खसा देल जाइत छलैक। आब हमरा बुझाइए जे डॉ. रमानन्द झा 'रमण' किए भीम भाइक रचना 'घर–बाहर'मे लसका दैत छलथिन जखन कि तहिया धरि घर–बाहरक सम्पादक डॉ. बासुकीनाथ झाजी छलथिन। जे मिहिरमे भेल करैत छलै सैह घर–बाहरोमे होइत छलै।

हम ओहन सम्पादक नहि रहलहुँ। 'समय–साल'मे सेहो हमरामे आ मधुकान्त झाजीमे पूर्ण पारदर्शिता रहल। हम रचनाक महत्व दैत छलिऐक आ एखनो दैत छिऐक। हुनक दुनूक रचनाक उद्धरण कैकटाम देखबामे आयल अछि जे आ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ आद. भीम भाइक रचना हम छपलियनि। हँ, हमरासँ चूक भेल जे किएक नहि देखलिऐक फाइनल प्रिन्ट आ अपन गलती कही वा चूक ताहि लेल हमरा अपन गंजन सार्वजनिक स्थलपर सूनय पड़ल आ हुनका दुनूकेँ विशाल पाठकवर्ग भेटलनि। तेँ एहि आलेखक शीर्षक देल अछि–हमर अभाग : हुनक सौभाग्य।

29/08/2021

मैथिलीक राजनीतिक कृपा

भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर अनुवाद कार्यपर विशेष ध्यान दऽ भारतक विभिन्न भाषा–भाषीकेँ आन भाषाक पोथी पढ़यबा लेल आ पाठ्यक्रमक पोथी जे विभिन्न विषयक अछि तकर अनुवाद करा सभ भाषा–भाषीकेँ मातृभाषामे उपलब्ध करयबाक हेतु विशेष सक्रिय अछि। जेँ कि मैथिली आब सेहो संविधान स्वीकृत भाषा अछि तेँ मैथिलीमे ई अभियान पूरा तामझामक संग प्रारंभ भेल। संयोगसँ कोना ने कोना हमहूँ एहिमे शामिल भेलहुँ प्रायः श्री नचिकेता जी संस्थानक निदेशक रहथि तेँ। ओ सोचने होयताह जे मैथिलीक किछु काज भऽ जाइक मुदा ई एकटा राजनीतिक अखाढ़ा भऽ गेलैक आ एहूमे मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्नताक कारणे एखनधरि काज ठमकले जकाँ छैक।

हम भाषा संस्थानसँ तीन रूपमे जुड़लहुँ 'मैथिली स्टाइल मैनुअल' मे सम्पादक रूपमे, अनुवादमिशनमे प्रकाशक रूपमे आ पोथी प्रकाशन (पुरान पोथी)क चयन समितिमे मुदा एहि तीनू ठामसँ हम अपनाकेँ शनैः शनैः फराक कऽ लेलहुँ, कारण मैथिलक गोलैसी ओ गुटबन्दी। मैथिलीक काज गोलैसी सँ बाधित हो से पसिन्द नहि, 'डीए. टीए' पारिश्रमिकक नामपर कमाइ करी से दुष्प्रवृति नहि तेँ ।

एहि सम्बन्धमे हम दू टा घटनाक उल्लेख करय चाहब। पहिल मैथिली अकादमीक सहयोगसँ ए.एन.सिन्हा इन्स्टीच्यूटमे भेल 'सेमिनार सह वर्कशाप'मे हम आ मधुकान्त जी कोनो टाका पैसा नहि लेलिऐक जखन की वाजाप्ता दुनू गोटे आमंत्रित रही जाहिमे खर्च देबाक बात

रहैक। मुदा बादमे पैसा उठा कऽ रशीद पर दस्तखत नहि कयलिऐक से सूचित करैत फार्म पठाओल गेल हस्ताक्षर कऽ पठयबा लेल। दुनू गोटे भौंच्चक रहि गेलहुँ।

दोसर घटना रोचक अछि। एक दिन आफिसमे बैसल रही। श्री तेजकर झाजी (विज्ञापन प्रकाशन आ आ0 हेतुकर बाबूक जेठ बालक)क फोन आयल। सर, शेखर प्रकाशनकेँ काज नहि भेटैक अनुवादमिशनक अन्तर्गत ताहिपर संस्थानक मीटिंग (प्रकाशक आ संपादकक)मे दू टा मैथिलीक विद्वान विरोध कयलथिन अछि। एहिपर प्रकाशक सभ खूब हल्ला–फसाद कयलकैक आ मीटिंग स्थगित भऽ गेलैक। 'ओ आर बहुत रास बात कहलनि जे के की बजलैक आ की भेलैक। हमरा संस्थान द्वारा नओ किताबक अनुवाद, प्रूफरीडिंग, प्रकाशन आ वितरणक भार देल गेल अछि से सूचित कऽ देल गेल छल तेँ अवगत रही। हमरा सबटा बात बुझबामे आबि गेल।

ओही दिन लगभग चारि बजे श्री अजित मिश्र (वर्तमानमे मैथिलीक प्राध्यापक, तत्कालीन भाषा संस्थानक रिसोर्स पर्सन)क फोन आयल–सर, अपनेसँ मैडम (तत्कालीन डिप्टी डायरेक्टर भाषा संस्थान, मैसूर श्रीमती अदिति मुखर्जी) भेंट करय चाहैत छथि, हुनक फ्लाइट सात बजे संध्यामे छनि। अपने आबि सकैत छिऐक?' हमर उत्तर छल–'सात बजे तक हम आफिसमे रहैत छी तेँ संभव नहि अछि।' अजितजी फोन राखि देलनि मुदा फेर दस मिनट बाद फोन कयलनि–'सर, मैडम अपनेसँ भेट करय आबऽ चाहैत छथि, की कहैत छी?' हम कहलियनि–'स्वागत छनि, निधोख भऽ आउ, अपन घर–संस्था अछि।' दुनू गोटे साढ़े चारि बजे अयलाह आ औपचारिक गप्प सभ हमर टूटल–फूटल घर वला, न्यू मार्केटक कार्यालयमे प्रारंभ भेल। चाय–पानक

बाद श्रीमती मुखर्जी गप्प प्रारंभ कयलनि – चौधरी जी, काम कैसे होगा यह बताइये?' हम कहलियनि–मैडम, आपके आजके मीटिंगमे जो कुछ हुआ मुझे सब मालूम है इसलिए मैं तहमे नहीं जाना चाहता हूँ, पर एक बात बता देता हूँ। मैथिली का कोई भी काम जो मैं करता हूँ उसमें राजनीति नहीं करता और अगर कोई करत्ता है तो उसे बर्दाश्त भी नहीं करता। इसलिए हमलोग इस मुद्दा पर बात करें इससे पहले एक बात स्पष्ट समझ लें। मैं इस संस्था का मालिक हूँ और आप भारत सरकारके एक संस्थानमे उच्च पदस्थ पदाधिकारी हैं। आय में आप मुझसे चार गुणा ज्यादा कमाती हैं। लेकिन हममें और आपमें एकं फर्क है–आप नोकरी करती हैं और मैं मालिक हूँ। तो बात करने से पहले यह समझ लें कि एक मालिक से एक संस्था का कर्मचारी/पदाधिकारी बात कर रहा है।'

हमर एतवा कहैत ओतऽ चुप्पी पसरि गेल। अजितजी एमहर–ओमहर देखय लगलाह आ श्रीमती मुखर्जीक चेहरा रक्ताभ भऽ गेलनि। पाँच मिनटक बाद वैह चुप्पी तोड़लनि। बहुत संयत स्वरमे बजंलीह–'अच्छा यह बताइये अब काम कैसे होगा?'

हमर उत्तर छल–पहले यह बताइये, अनुवाद मैं कराऊँगा, कम्पोजिंग– प्रिन्टिग मैं कराऊँगा, वितरण मैं करुँगा और एक दो चमचो के कहने पर, सम्पादक बिना मुझसे राय लिये आप चयन कर ली हैं? क्या यह उचित है? और अगर नहीं तो प्रकाशक–सम्पादक के मीटिंग में मुझे नहीं बुलाया गया जब कि शेखर प्रकाशन को नौ किताबें तैयार कराने सम्बन्धी पत्र दिये गये थे। इसका मैं क्या अर्थ निकालूँ? आज की मीटिंगमे जो हुआ मुझे सब मालूम है और एक मालिक के रूपमें मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि मैं आपका कोई भी काम नहीं करूँगा, यह मेरा

निर्णय है क्योंकि आप भी मैथिली की राजनीतिमें शामिल हैं, कीजिये। हँ, एक बात अवश्य कहूँगा कि दरभंगा की मीटिंगमे स्पष्ट कहा गया था कि अनुवादक को प्रति शब्द एक रूपये दिये जायेंगे और मुझे अनौपचारिक रूपमे कहा गया कि आप कम देकर काम चला लेंगे। कृपया मुझे 'चोर', बइमान बनाने की कोशिश न करें।'

एकर बाद ओ बहुत रास बात कहलनि मुदा हम दृढ़ रहलहुँ आ ओ भारी मनसँ विदा भऽ गेलीह। अजित जी प्राय: हमर व्यवहारसँ दु:खी छलाह से हमरा अनुमान भेल। प्राय: आब जँ अजित जी हमर संस्मरण पढ़ताह तँ दु:ख नहि हेतनि। 'की अजित जी हम कतहु गलत नहि ने लिखलहुँ अछि!'

बादमे सुनलहुँ किछु काज नोवेल्टीकेँ भेटलैक, श्री नरेन्द्र कुमार झा जी कैक बेर कहलनि–मदत करो', मुदा हम चुपचाप टारि देलियनि हुनकर गप्पकेँ। एकदिन आदरणीय चन्द्रनाथ झा जी (पं. सीताराम झा जीक पौत्र एवं बिहार सरकारक सेवानिवृत वरिष्ठ पदाधिकारी) कहलनि जे हमरासँ अनुवाद करा लेलनि, जे फुरयलनि कने–मने दऽ टरका देलनि।

मैथिलीक राजनीतिक कृपा आ ओ दुनू महानुभावक, जे हमर विरोध कयलनि, क स्नेहसँ हम आइयो अभिभूत छी जे धन्य ओ लोकनि जे मैथिली जीवित छथि, आगाँ बढ़ि रहलीह अछि! आ हमर ई विश्वास अछि जे मैथिलीमे जावत धरि ई गोलैसी चलैत रहत मैथिली जीवित रहतीह।

20/08/21

इर्ष्या द्वेष नहि–समन्वय चाही

फेसबुक पर मखरैत, फरकैत, बिहनि–कथा संग खेलैत, हँसैत श्री परमेसर कापड़ि, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली स्नातकोत्तर विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपालकेँ देखैत छियनि तँ मोन प्रफुल्लित भऽ जाइत अछि। एहि प्रफुल्लताक अनेक कारण अछि। एकर प्रत्यक्ष गवाह मित्र श्री रामभरोष कापड़ि 'भ्रमर' एवं अप्रत्यक्ष गवाह आ. श्री महेन्द्र मलंगिया जी सेहो छथि।

प्राय: 2015 प्रथम 'मैथिली लिटरेचर फेस्टीवल, पटना (आयोजक, मैथिली लेखक संघ, पटना) मे श्री परमेश्वर कापड़ि जी आयल रहथि। हुनकर दर्शन करबाक इच्छा भेल। मुदा हुनक मुखमंडल देखना 15 वर्ष प्राय: भऽ गेल छल तँ डा0 योगानन्द झाक जीक सहयोग लेलियनि। हुनका एतवे कहलियनि–अहाँ हुनके संग टहलैत लेखक संघक कार्यालय दिस लऽ अयबनि तँ हम चिन्हि जयबनि। बात की छलैक से हुनका नहि कहलियनि। ओ ओहिना कयलनि। हम श्री कापड़िजीक अबितहि हुनकासँ प्रश्न कयलियनि–हम शरदिन्दु चौधरी, चिन्हलहु की नहि? ओ थतमताइत नमस्कार कयलनि आ कुशल क्षेम पूछय लगलाह। हम हुनका कहलियनि–अहाँकेँ एहिठाम बॉसमे बान्हि कऽ पीटी तँ कोनो हर्ज नहि ने। ओ अकबका गेलाह। ओतऽ सरकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट) आ युवा कविं बालमुकुन्दजी सेहो छलाह।

एहि सँ पूर्व भेल ई रहैक जे 2000 ई0क लकधकमे ओ श्री

रामभरोस कापड़ि जीक संग हमर इन्द्रपुरी, पटना आवास पर आयल छलाह। हम तावत घरे पर किताबक व्यवसाय करैत रही। ओ लगभग पाँच हजारक पोथी अपन मैथिली विभाग हेतु लेलनि आ बिलपर हमरासँ हस्ताक्षर करबा लेलनि जे हम भुगतान पाबि लेलहुँ। ओ कहलनि जे ओतुक्का चेक वा नगद टाका भेटत से भजयबामे अहाँकेँ दिक्कति होयत तेँ हम जाइते ई राशि भारतीय टाकामे पठा देब। मुदा आइ धरि ओ टाका हमरा नहि भेटल, कैकबेर तगादा कयलोपर आ श्री रामभरोष जीक कहलोपर तेँ हम हुनका संग ई निर्मम व्यवहार कयलियनि। फेर फेस्टीवलमे गछलनि जे हम नेपाल जाइते टाका पठा देब अहाँ अपन बैंकक पूरा विवरण दऽ दियऽ। हम दऽ देलियनि। मुदा परिणाम वैह जे एहि कोटिक लोक करैत छैक। प्रतीक्षा करिते छी।

केदार काननक कैकटा शिष्य सेहो एहिना कयलथिन अछि, शोषक–शोषित दुनू पक्षक बातसँ बूझल अछि। आर बहुत गोटे हमरा संग कयने छथि। अभावक कारणे भुगतान नहि करबाक स्थिति आबि सकैत छैक, आर कैक कारण भऽ सकैत छैक मुदा घर पैसि वस्तुजात कीनि कऽ लऽ जाउ आ बोर्डर पार होइते औंठा देखा दियऽ। पकड़ा जाउ तँ धर खसा लियऽ आ दूर होइते अपन **जेनेटिक** परिचय दऽ दियऽ। ई शब्द हम जानि बूझि कऽ एहि कारणे कयलहुँ अछि जे माननीय श्री तारानन्द वियोगीजी संज्ञान लेथि जे फेसबुकक परिचर्चामे कोनो जाति विशेष लेल उदाहरण स्वरूप 'सभ बापूत' शब्दक प्रयोग खुलि कऽ करैत छथि।

हमर मानब ई अछि जे सभ जाति–सम्प्रदायमे नीक–बेजाय लोक होइत छैक तेँ ई दुनिया चलैत छैक। जँ ई नहि होइतैक तँ ओ जाहि परिचर्चामे भाग लैत छथि ओहूमे 70 प्रतिशत वैह लोक भाग लैत

अछि जकर पुरुखाकेँ ओ उकटैत छथिन आ पचास प्रतिशत लोक (जाहिमे 40% लोक आब सम्पन्न अछि) बिना फीस भरने, बिना योग्यताक, नि:शुल्क अनाज, नि:शुल्क पोथी, नि:शुल्क वस्त्र, नि:शुल्क घरक सहित आन सुविधा पाबि श्री परमेश्वर कापड़ि ब्राह्मण सेहो सन लोक मिथिलामे धन–पशु बनि मखरैत अछि, फरकैत अछि मुदा ने ओ तारानन्द वियोगी बनि पबैत अछि, ने श्री सुभाष चन्द्र यादव बनि पबैछ आ ने श्री रामभरोस कापड़ि बनि पबैत अछि। हम लोहा मानबनि श्री वियोगीजीक तखन जखन अपना सदृश बीसो टा व्यक्तित्वक निर्माण ओ अपना समाजसँ ठाढ़ कऽ देखाबथु। मात्र उकटा पैंची कयलासँ समाजमे ईर्ष्या–द्वेष टा पसरैत छैक आ सौहार्द–सहयोग–समन्वयक क्षय होइत छैक। मिथिलाक ने एहन परम्परा रहलैक अछि आ ने एहन स्वरूप।

की परमेश्वर कापड़ि जी हम टीक कहि रहल छी ने! हम ने ग्रियर्सन छी आ ने श्री तारानन्द वियोगीजी जे अहाँ लेल कोनो लोकोक्तिक प्रयोग कऽ सकी।

31/08/2021

शरदिन्दु चौधरी

जन्म	:	7-10-1956, मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार
माता	:	स्वर्गीय मोती देवी
पिता	:	पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी
शिक्षा	:	एम.ए. राजनीतिशास्त्र, पटना, विश्वविद्यालय, पटना-1, एल.एल.बी., मगध विश्वविद्यालय, गया
वृत्ति	:	पत्रकारिता 1981-84, मिथिला मिहिर, साप्ताहिक 1984-86, मिथिला मिहिर, दैनिक 1987-89, मिथिला मिहिर, मासिक 1995-2002, आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक (फीचर सम्पादक) समय-साल, मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक 2000 सँ 2014 पूर्वोत्तर मैथिल, गुवाहाटी, सम्पादक, 2015-16
सम्प्रति	:	शेखर प्रकाशन (मुद्रक, प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)क व्यवस्थापक - संचालक।
प्रकाशित कृति	:	❖ जँ हम जनितहुँ ❖ बड़ अजगुत देखल ❖ गोबरगणेश ❖ करिया कक्काक कोरामिन (व्यंग्य संग्रह) बात-बातपर बात मर्मान्तक-शब्दानुभूति, हमर अभाग : हुनक नहि दोष (संस्मरणात्मक निबंध)।
सम्पादक	:	मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा ❖ साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी ❖ विद्यापति गीतिका (दू भाग) ❖ मैथिली गद्य गौरव ❖ पाठ्य पुस्तक निगमक पांचम वर्गक मैथिली पोथी ❖ अभिमत (हिन्दी)। 20 सँ बेसी स्मारिकाक संपादक। आकाशवाणी, दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता प्रसारित एवं हिन्दी दैनिक तथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित।
विशेष	:	दूरदर्शन, आकाशवाणी, भाषा संस्थान, साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी एवं मैथिल संस्था सभमे आजीवन सक्रिय भाग नहि लेवाक निर्णय।

सम्पर्क



शेखर प्रकाशन
प्रथम तल्ला, भुवनेश्वर प्लाजा, न्यू मार्केट, पटना-1
मुख्यालय : 2A/39, इन्द्रपुरी, पटना-800024
मो. - +91 93341 02305, 7759090913

हमर अभाग : हुनक नहि दोष



शरदिन्दु चौधरी